P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-7* (Part-2) March- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

भारत वर्ष में पलायन पर चिन्तन का एक ऐतिहासिक अवलोकन

दिनेश कुमार जैसाली
शोधार्थी,
इतिहास विभाग,
डी0ए0वी0पी0जी0,
देहरादून
(हे0न0ब0ग0पू0 केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
श्रीनगर गढ़वाल,
उत्तराखण्ड, भारत

सारांश

पलायन शब्द की उत्तपति पलायनवादी विचारधारा से उत्पन्न हुई है जिसका अर्थ वह सिद्धान्त या मत है जिस में जीवन के यर्थात , कठिनाईयों, संधर्षो से दूर भागने की प्रवृति अथवा बेहतर कल की लालसा में मूल स्थान का परित्याग से है आधुनिक यर्थातवादी विचार इस भावना को अपना विरोधी मानने लगे है, यह संघर्ष न करके भाग जाने प्रवृति मानी जाती है जिससे नये संधर्ष का सूत्रपात होता है। यह एक वैश्विक विचार है जो मानव इतिहास के प्रारब्ध से उसके साथ चला आ रहा है, मानव के पहले स्वरूप होमों इरेक्टस को अफ्रिका महाद्वीप से पलायन के कारण सम्पूर्ण विश्व में मानव सभ्यता का प्रसारक हुआ अर्थात इस बात में कोई दो राय नही है कि वर्तमान परिदृश्य में पलायन को चाहे नकारात्मक भाव के रूप में प्रचारित किया जाय परन्तु प्रारम्भिक मानव द्वारा पलायन के कारण ही मानव विकास की एक नवीन विचार श्रृखला का सुत्रपात किया परन्तु वह अपने दूष्प्रभावों से निर्मूक्त नहीं है। प्राचीन काल से मनुष्य अपनी भ्रमणशीलता के लिये प्रसिद्ध रहा है वह संसाधनों की खोज, मानव संघर्ष, युद्ध, अत्याचार, भेदभाव तथा महामारियों के कारण एक स्थान से दूसरे स्थान की ओर प्रवासन करता था। वास्तव में जनसंख्या के पलायन का इतिहास संभवतः उतना ही प्राचीन है जितना मनुष्य का इतिहास है, विश्व के इतिहास का अवलोकन करने पर यह दृष्टिगत होता है कि आर्यो ने मध्य एशिया से भारतीय उपमहाद्वीप में पलायन किया, मध्यकाल में इग्लैंड तथा फ्रांस द्वारा उपनिवेश एवं साम्राज्यवादी नीति के कारण एशिया, अफ्रिका, अमेरिका तथा आस्ट्रेलिया की ओर पलायन किया सम्पूर्ण विश्व का इतिहास इन्ही घटनाओं से परिपूर्ण रहा है।

मुख्य शब्द : वैश्वीकरण, पलायनवादी विचारधारा, उपनिवेश एवं साम्राज्यवादी नीति।

प्रस्तावना

पलायन को परिभाषित करने वाले विद्वान रेवनेट के अनुसार पलायन को मुख्य रूप से दो प्रकारों में विभाजित किया जा सकता है।

1. जब कोई व्यक्ति किसी राष्ट् की सीमाओं को पार कर किसी अन्य राष्ट्र की सीमा में प्रवेश कर निवास करना शुरू करता है तो उसे अन्तर राष्टीय पलायन कहा जाता है इसके के दो स्वरूप होते हैं।
2. जब व्यक्ति एक राष्ट्र की सीमा के अन्दर एक स्थान से दूसरे में जा कर निवास करता है उसे अतः राष्ट्रीय प्रवासन कहा जाता है।
   a) ग्रामीण क्षेत्रों से नगरीय क्षेत्रों में पलायन
   b) नगरीय क्षेत्रों से नगरीय क्षेत्रों में पलायन
   c) ग्रामीण क्षेत्रों से नगरीय क्षेत्रों में पलायन
   d) नगरीय क्षेत्रों से ग्रामीण क्षेत्रों में पलायन

पलायन शब्द मनुष्य की उत्पत्ति से ही उसके साथ जुड़ा हुआ है। प्राचीन काल के विषय स्थितियों के कारण मनुष्य पाषाणिक जीवन भ्रमणशील तथा पशुचारक के रूप में व्यतीत हुआ। बढ़ावा दिया वहीं विभिन्न राजवंशो की साम्राज्यवादी नीति के पूंजीवादी, उपनिवेशवाद तथा उपभोगतावाद ने पलायन को उसके सर्वोच्च स्तर पर पहुंचा दिया है जिससे वैश्विक गांव की अवधारणा स्थापित हो रही है।

वर्तमान विश्व में पलायन एक सामान्य परिघटना मानी जा रही है, व्यक्ति प्रतिभा तथा सुविधा के लिये पलायन कर रहा है। विकसित राष्ट्र में पलायन बेहतर जीवन जीनें की लालसा में किया जाता है जबकि विकासशील राष्ट्र में पलायन मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु अपने मूल स्थान का

परित्याग करता है भौतिक विचारक रेवस्टीन के अनुसार व्यक्ति सुविधाओं अथवा मूलभूत आवश्यकताओं की पहुँच को दूरी के दृष्टिकोण से परिभाषित करता है तथा कम दूरी के पलायन पर ज्यादा विश्वास रखता है जिसका तात्पर्य व्यक्ति अपने मूल स्थान के प्रति आकर्षण का परित्याग करता चाहता है।

प्राचीन भारत के इतिहास से लेकर वर्तमान वैश्वीकरण के युग में भारत वर्ष की कुल जनसंख्या का 30 प्रतिशत पलायन से आशिक अथवा पूर्ण प्रभावित है 2001 की जनगणना के अनुसार सन् 1991 से सन् 2001 के बीच भारत वर्ष के विभिन्न ग्रमीण क्षेत्रों से ग्रमीण क्षेत्रों की ओर 51 प्रतिशत लोगों ने पलायन किया जिसमें सबसे अधिक 14.7 प्रतिशत पलायन केवल रोजगार के लिये ही हुआ है। 16.4 प्रतिशत के साथ महाराष्ट्र भारत वर्ष में पलायन से प्रभावित राज्यों में प्रथम स्थान पर है जबकि उत्तराखण्ड इस सूची में हिमालयी राज्यों में तो प्रथम स्थान पर परन्तु भारत वर्ष की पलायन संबधित रिर्पोट में 12 वे स्थान पर है।

भारत सरकार की संस्था NSSO की रिर्पोट के अनुसार भारत के विभिन्न राज्यों में ग्रामीण शहरी पलायन प्रतिवर्ष प्रति हजार लोगों पर अधोलिखित है

	Migration Streams				
State	**Rural To Rural**	**Urban To Rural**	**Rural To Urban**	**Urban To Urban**	**All**
Andra Pradesh	333	76	413	178	1000
Arunanchal Pradesh	264	287	287	161	1000
Assam	492	35	357	117	1000
Bihar	285	54	492	169	1000
Chattisgarh	421	95	32	182	1000
Himanchal	370	389	168	74	1000
J $ K	281	247	272	199	1000
Karnatak	247	142	333	279	1000
Kerala	534	169	165	133	1000
Madhya Pradesh	311	69	325	295	1000
Maharastra	220	63	420	297	1000
Manipur	514	135	203	149	1000
Meghalaya	581	251	118	50	1000
Mizoram	328	40	333	300	1000
Orrisa	336	110	309	245	1000
Punjab	269	106	417	208	1000
Uttarakhand	356	173	217	254	1000
West Bangal	273	86	332	390	1000

भारत में पलायन को दो रूपों में समझा जा सकता है आजादी से पूर्व विश्व सभ्यताओं का भारत की ओर पलायन हुआ। इतिहासकार भारत की पहली नगरीय सभ्यता के संस्थाओं को सम्बन्ध मेसोपोटामिया से सम्बन्धित करना चाहते है वहीं वैदिक साहित्य में वर्णित विदेह माधव तथा वैश्वानर की कहानी, बोगार्जकोई का अभिलेख तथा ऋग्वेद में इन्द्र को पुरंदर के रूप में संबोधित करना भाषाई आधार आर्यो के प्रवासीय होने का प्रमाण है शक कुषाण इण्डोग्रीक आदि विदेशी शक्तियों का भारत में पलायन प्राचीन इतिहास का महत्वपूर्ण लक्षण है, वहीं मध्यकाल में इस्लामिक साम्राज्यवाद का भारत में पलायन तथा आधुनिक काल में उपनिवेशीय पलायन का भारत में स्थापित होना, भारत में पलायन की विचारधारा को आधार प्रदान करता है।

भारत में आजादी से पूर्व व्यापारियों, साम्राज्यवादियों, उपनिवेशवादी शक्तियों का भारत की ओर पलायन हुआ था, जिसके परिणाम स्वरूप समय–समय पर भारत में सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक पलायन भी हुआ, परन्तु आजादी के बाद मूलभूत सुविधाओं के अभाव तथा बेहतर जीवन जीने की जिज्ञासा ने भारत से पलायन की प्रवृति को बढ़ाया।

भारत में पहला अन्तर्राष्टीय पलायन गिरमिटियों के रूप में अंग्रेजों द्वारा श्रमिकों के रूप में भारतीयों को सम्पूर्ण विश्व में स्थित उपनिवेशों में भेजा गया, जहां पर बेहतर जीवन स्तर होने के कारण इन श्रमिको ने कालान्तर में पहले अपने परिवार तथा अपने गावो को पलायन करवाने लगे, अमेरिका, कनाडा, अफ्रीका, मैक्सिकों, यूरोप आदि देशों में प्रवासीय भारतीय अपना जीवन निर्वाह कर रहे है। गिरमिटियों के रूप में प्रारम्भ हुये इस पलायन का वर्तमान डायसफोरा या प्रतिभा पलायन के रूप में भारत में देखने को मिल रहा है।

पलायन सामान्यतः अपने स्थिति में सुधार हेतु मूल निवास स्थल से अन्य स्थल पर जा कर निवास करने हेतु व्यक्ति को दो कारक प्रेरित करते हैं, आकर्षण तथा विकर्षण। यदि पलायन आकर्षण के कारण हुआ है तब यह सम्भव है कि पलायनकर्ता का मूलनिवास स्थान पर शोषण में आर्थिक तत्व सदैव शक्तिशाली होता है। इस स्थिति में पलायनकर्ता पलायन केवल अपनी वर्तमान स्थिति में सुधार हेतु नहीं करत है अपितु उसका प्रमुख उद्देश्य अपने परिवार का जीवन यापन करना है। इस प्रकार के पलायन में ही जीवन यापन करता है। इससे प्रश्न यह उठता है कि आखिर इस पलायन से व्यक्ति को क्या प्राप्त हुआ, भारत के अनेक राज्यों में इस तरह का पलायन अक्सर दिखाई देता है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध–पत्र में पलायन के विभिन्न पहलुओं को समझने का प्रयास किया गया है जिससे पलायन से

उत्पन्न होने वाली समस्याओं का समाधान करने में सहायता मिल सके।

निष्कर्ष

पलायन यदि शोषण से रक्षा हेतु होता है तो यह भी सत्य है कि पलायन शोषण से मुक्ति का एक साधन भी है, परन्तु इसे समस्या के समाधान के रूप में नहीं देखा जा सकता है, क्योंकि पलायनकर्ता जिस स्थान पर पलायन करता है वहॉ वह अपने नाते रिश्तेदार, सामाजिक प्रतिष्ठा, मूल पहचान को खो देता है, वहॉ वह अकेला असहाय तथा विवश महसूस करता है जिससे उसकी मानसिक शान्ति का ह्रास होता है। भारत में अल्पवयस्क बच्चों, लोगों का पलायन इस तरह की समस्याओं का अकसर सामना करता है। जिसकी अभिव्यक्ति अकसर यहॉ लोक गीतों में सुनाई देती है महिला श्रमिकों का दैहिक शोषण की प्रवृतियां देखने को मिलती है। यह सब पलायन का विश्लेषण किया जाए तथा इन समस्याओं के मूल में पहुॅच कर उसका निराकरण करने का प्रयास किया जायें।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

आहुजा, राम –भारतीय समाज, पृष्ठ संख्या 263–286 जनजातीय समाज, रावत पब्लिकेशन नई दिल्ली 2007

नागोरी एस0एल0 व नागोरी, कांता– प्राचीन भारत का वृहद इतिहास पृष्ठ–संख्या 45 पोइन्टर पब्लिकेशन नई दिल्ली 2007

काबरा, कमल नयन – भूमण्डलीकरण के भॅवर में भारत, पृष्ठ संख्या 34,45,73 प्रकाशन संस्थान नई दिल्ली 2005

सेन, अमर्त्य –भारत विकास की दिशा, पृष्ठ संख्या 35,165 राजपाल एण्ड सन्स प्रकाशन कश्मीरी गेट, नई दिल्ली 2006

हबीब, इरफान – भारतीय इतिहास और विचारधारा, ग्रन्थशिल्पी पब्लिकेशन नई दिल्ली 2005